International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

''विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध निर्देशक
डॉ. राम प्रताप सैनी
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/688

रतनलाल सामोता
पी–एच.डी. (एज्यूकेशन) (छात्र)
पंजीयन सं. 20119003
जे.जे.टी.विश्वविद्यालय,
चुड़ेला, झुंझुनू

सहशोध निर्देशक
डॉ. राजेन्द्र झाझड़िया
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/0571

प्रस्तावना –

शिक्षा के पक्षों की दृष्टि से देखा जाए तो शिक्षक शिक्षार्थी और शिक्षा में तीन सशक्त स्तम्भ है, जिन पर शिक्षा व्यवस्था रूपी भवन स्थित है। इन तीनों में सम्यक् एवं सन्तुलित समन्ताप से ही समाज की उन्नति एवं विकास सम्भव है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण एवं अहम् स्थान शिक्षक का है। विद्यादान के द्वारा मानव जीवन को सब प्रकार से सार्थक करने वाले शिक्षक अर्थात् गुरू का स्थान हिन्दु धर्म में देवता से भी बढ़कर है।

विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की सफलता व्यावसायिक अभिक्षमता पर निर्भर करेगी। व्यावसायिक अभिक्षमता के प्रभाव में शिक्षण प्रभावी नहीं हो सकता। अतः यह प्रश्न अत्यन्त स्वाभाविक है कि विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक किस सीमा तक व्यावसायिक अभिक्षमता से सम्पन्न है।

अध्ययन का महत्व :–

आज व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका के सन्दर्भ में यह जानना अत्यन्त वांछनीय है कि हमारे विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक, अध्यापिकाएँ इस भूमिका का सफल निर्वाह कर सकते हैं या नहीं। साथ ही यह जानना भी अत्यन्त आवश्यक है कि भावी शिक्षक अध्यापन व्यवसाय के प्रति निष्ठावान हैं या नहीं। उनमें व्यावसायिक अभिक्षमता की दृष्टि से उनकी क्या विशेषताएँ है? वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में इस प्रश्न का उत्तर खोजना शिक्षा में गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु अति महत्वपूर्ण है।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है।

अध्ययन का औचित्य :-

पूर्व में हुए अध्ययनों के अतिरिक्त इस दिशा में अलग-अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं शिक्षकों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता के स्तर में सुधार करने में संभव हो सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक राष्ट्र का दिशा निर्देशक एवं भविष्य का निर्माता होता है। **प्रसिद्ध शिक्षाविद्ध नेल्सन एल. वोसिंग** के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि **"मैं शिक्षा की किसी भी योजना एवं क्रियान्विति में शिक्षक के केन्द्रीय स्थान का पक्षधर हूँ।"** उक्त कथन से प्रस्तुत अध्ययन की सार्थकता स्पष्ट होती है।

शोध अध्ययन से विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता का स्तर पता लगने तथा पहचान होने पर अनेक शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया के बाधक तत्वों का पता लग पाता है। इस निमित्त भावी शैक्षिक आयोजना में सुधार के नए आयाम स्थापित हो सकते हैं। साथ ही उक्त अध्ययन से वे सभी मनोसामाजिक एवं व्यवस्थायी कारकों की जानकारी होगी जिसके अध्ययन से संज्ञानित होकर शिक्षकों के व्यक्तित्व निर्माण के अनेक कार्य सिद्ध हो सकेंगे। उक्त अध्ययन मिशनरी, आदर्श विद्या मंदिर एवं नवोदय विद्यालयों के क्षेत्र में व्यापक सार्थकता रखता है। अतः शोधकर्ता ने निम्नलिखित शीर्षक पर कार्य करने का निर्णय लिया।

समस्या कथन :-

"विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोधकार्य राजस्थान के जयपुर संभाग तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल मिशनरी, आदर्श विद्या मंदिर एवं नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों–शिक्षिकाओं को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में 600 शिक्षकों–शिक्षिकाओं को लिया गया है जिसमें 200 मिशनरी, 200 आदर्श विद्या मंदिर एवं 200 नवोदय विद्यालयों के अध्यापक अध्यापिकाओं को लिया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

व्यावसायिक अभिक्षमता मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा डॉ. आर.पी.सिंह एवं एस.एन.शर्मा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R. Value की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

शिक्षक	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
मिशनरी	100	138.25	21.01	5.02		सार्थक अन्तर हैं।
आदर्श विद्या मंदिर	100	126.70	14.30			

(df=N_1+N_2−2=100+100−2=198)

विश्लेषण :–

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता :–

आज भी शिक्षा की धुरी शिक्षक ही है। केन्द्र में छात्र भले हो पर केवल छात्र ही सबकुछ नहीं, शिक्षक मार्गदर्शक है। यदि वह अपने पद से अलग हो जाए तो छात्र रूपी नाव अज्ञात समुद्र में लहरों के थपेड़े खाकर डूब सकता है। आवश्यकता है शिक्षक को अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित भाव से कार्य करना चाहिए। कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण एवं प्रेरित होना चाहिए। अपनी क्षमता का पूर्ण प्रदर्शन करना चाहिए। विद्यालयी परिवेश में मैत्री पूर्ण भाव से समायोजित होना चाहिए।

इस दृष्टि से शोधकर्ता का यह शोध कार्य एक ऐसे दिशा निर्देश से जुड़ा है जो शिक्षक को संवेदनशील, उत्तरदायी, छात्रप्रेमी एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षक के कार्य का मूल्यांकन उसके छात्र होते हैं और शिक्षक और छात्र दोनों के संयोजन से ही शैक्षिक उत्थान संभव है। यह शोधकार्य शिक्षक की पृष्ठभूमि के सार्थक एवं नैतिक पक्ष को भी रेखांकित कर सकेगा, जिससे भविष्य की चुनौतियों का सामना किया जाय, शिक्षक उन छात्रों को तैयार कर सके जो आने वाले भविष्य में उत्तरदायी नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

कुल मिलाकर इस शोधकार्य का निहितार्थ इस दृष्टि से अधिक समझा गया है कि आज शिक्षक क्या केवल धनोपार्जन तक ही सीमित हो गया है। क्या छात्र उसकी सम्पत्ति नहीं है? क्या उसकी क्षमता समाप्त हो गयी है। क्या उस पर प्रशासनिक नियंत्रण नहीं है? इत्यादि प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में इस शोध का निहितार्थ स्पष्ट है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. आहुजा, मुकेश : भारतीय सामाजिक व्यवस्था,वर्धमान महावीर कोटा खुला विश्वविद्यालय 2008
2. औड, माथुर, वर्मा : शैक्षिक प्रशासन, रास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2008
3. बायेती, प्रो. जमनालाल,तृतीय विश्व के सन्दर्भ में शिक्षा समस्यायें 2008
4. चौबे और चौबेः शिक्षा के दार्शनिक ऐतिहासिक और समाज शास्त्रीय आधार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ 2009
5. ढोडियाल एवं फाटक : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, रास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1972
6. गिलफोर्ड, जे.पी. मनोविज्ञान में आधारभूत सांख्यिकी 1964
7. मोहम्मद हारून : मुस्लिम ऑफ इण्डिया' भारतीय संदर्भ साहित्य ब्यूरो, नयी दिल्ली
8. पारीक एवं सिड़ाना ए. भारतीय शिक्षा की समस्यायें, 2008